

ॐ ॥ गुरु नमो नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

याहाव ॥ विष्णु कर्म ॥ १ ॥
 दमासन नमः ॥ यूर्ध्व ॥
 हस्तार्ध चन्दन यज्ञेय
 वीग यूर्ध्व दक्षिण ॥ २ ॥
 ऊनमसायन कललव
 रुध ॥ दगसायन कनन
 दगसायन मूलन न वक्रग
 नरायनायाय ॥ ३ ॥
 वक्रद्विहारी ॥ चन्दन
 सिद्धन यज्ञेय वाग यूर्ध्व
 धूष दीप जेवय ॥ सह
 अत्रातिप्रतिष्ठा ॥ आभा
 साद ॥ ४ ॥
 उदमीभन ॥ अ
 भनविस्तर्जन ॥ ५ ॥
 उदरि
 षयु मूलन ॥ यज्ञमा
 ननसि उलवाक जानका
 व वा मूलन नलं स्वधानथ
 यावगायहालाय ॥ स्वस्ति
 यावनथनिये ॥ यज्ञमा
 लाहायका वने मृत्पदा
 नसयन ॥ पूर्वमगदया
 ० सग ॥ ॥ सिंहासन

कानना
 हिमि
 माहि
 ० सी
 दि ० सी ४
 ला ॥

सवाहाव विष्णु कर्म कल
 सगप सिद्धल कर्म कन
 काव वा मूलन न प वसूय
 का आहाव हा मयाय ॥ ॥
 प्रित लेन ॥ १ ॥
 कां नि वन लाय लाहा ॥ २ ॥
 नमः ॥ ३ ॥
 वलंगन हलन याव प्रवा
 नलाय ॥ ४ ॥
 यसाहा ॥ ५ ॥
 लाय ॥ ६ ॥
 यसाहा ॥ ७ ॥
 लाय ॥ ८ ॥
 त्रविधिः ॥ ९ ॥

गगादवदमाक्रियामाव
 रत ॥ १ ॥
 लाहा ॥ २ ॥
 सि ॥ ३ ॥
 लाय ॥ ४ ॥
 लाहा ॥ ५ ॥
 नादवायसवमि वृणामु
 गा ॥ ६ ॥

गङ्गावनस्वनीनां विष्णुस्यैव तस्याऽप्यगतीति
शास्त्रस्यैव तस्याऽप्यगतीति
नैव तस्याऽप्यगतीति

वामसिखाहा ॥ १५ ॥ उं यान्मयसाहा वाभयसाहा
हाताजसाहा पनससाहा ॥ १६ ॥ अमृवानमृ
४ गु ये नुम नमृ ४ साहा ॥ १७ ॥

हवित्रिन्वयया दधः स्वाहा
॥ मूलनवीर्यपदाने ॥ उं
वीर्यपदानाय स्वाहा ॥ उं
प्रणामूर्ध्वविरुहागिथानि
प्रणिमंदित्र्यं । ग कृत्तना
यूनायुगं उलं जहाति क
मना । मृगं नसत्यमिन्द्रि
यं विधानं शुक्रमभस
त्रुदस्यन्त्रिमिदं यथामृ
गं मधुखाहा ॥ उं कवचाय
स्वाहा ॥ उं लं कविस्वहा ॥ उं
ग कृष्णनाय स्वाहा ॥ उं ग
कृष्णस्य धीना ॥ उं यून
वनाय स्वाहा ॥ उं स्वस्ति पः
नमनूव नम ॥ उं सोमना
नयनाय स्वाहा ॥ उं निवा
नामासि ॥ उं जगत्कर्मा
स्वाहा ॥ उं प्राणाय स्वाहा ॥
यूष्मन्त्याकाशपादहा ॥
श्रुवमनयाय कं ॥ उं इय
दादिव ॥ उं नयय स्वाहा
॥ लावनं दद्यात् ॥ उं गेव

शुद्धवह्निनी मूलननादा
कुंदनं ॥ कुंगना ॥ उं ना
जी कुंदनाय स्वाहा ॥ उं य
स्याय विर्यं कृत्तय स्वा
निद्रिन्मयि । अमृनाद
गं यस्यामा कृत्तमकी ग
मृ ४ स्वाहा ॥ मूलं घृतमधु
दापयत् ॥ उं गं जासि ॥ उं
अनयं जोना प्रगृहानम
ल्यं पत्यजातानुदकागि
दः । अविनी वृद्धिस्मना
अहं कृत्तय ममममि
ववृष उं गो स्वाहा ॥ नयः
ग्राहक्यात् ॥ नयः न
न गुठि विद्यात् सिंध
न विद्या अंगुली कृव
ना ॥ सिंधानमिग कृत्तय
क वानायावपादि ॥ उं न
न अंजनं साताम अंजन
हय ॥ अघपागुलं खन
हाय ॥ उं ग्रापादि स्वा ॥ न
नः यदाहा वनायाय ॥ उं

२३ ॥

पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं
पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं

जापमग्नयदं शातं ॥ १८ ॥ पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं
पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं पुनस्तुक्तं

मात्रा निदीक्या प्रा निदक्षिर्न (दक्षिणश्च) द्वा मा ध्वा मि श्र द्वा सत्य मा श्रवा गो र्थिना
[18] यमदस
सिद्धि १०

पृथिवीपुत्रीशमन्नि ० सुखानावरुद्रया
पनिविश्वकर्मा विम्वरे उ स्वाहा ॥ १२ ॥

तामिच्छेद्वैमदुहि ० सुविदान ० युजा

नास्तु य ॥ गगनवृन्दका तथा व
न बावन त्वाहा वरुनिनाकु
य ॥ उं जगता वमिन्द ॥ गगव
न्दकानका स्वाय क ॥ उं स
हस्रानि ॥ अनिनीन त्वाय ॥
उं नमः ॥ गगवाय व ॥ गग
वह वन ग ॥ उं वृक्षा य ग
न ॥ जालहासान गय क ॥
उं गवयाय ॥ उं विवाहाय
स्वाहा ॥ उं दवाना न्ना विरु
मा दयामुष्टा त्रिय ॥ त्वक्षान
सुगुण ० सामयी गय स्वाहा
॥ सुदूतनहाल ॥ क्वा यर
पुजालन कृव न ग ॥ वंदा
वनस्तु य ॥ सकतरि न मा
व ॥ दामस्तु य मात्र ॥ सुह
श्रमनि सुगुणा गावा द ॥ उं
मागा विरु विम रूनाय त्व
हा ॥ उं माग व य ॥ उं व
रुध्र स्वाहा ॥ उं गान्वक ॥
उं युगिष्टाय स्वाहा ॥ उं मना
रुति ॥ गगनहाल ॥ मृस
मरु न श्रुति ॥ २० ॥ वृ

॥ उं विध्वस्तक गुरु वन
सगर्भ श्राया दसा श्रुपुन ज
यमान ॥ विद विद विमनि
नल्यत्राय जना वद निमज
यक पय स्वाहा ॥ ॥ ॐ नि
दवद न किया ॥ ॥

पयसूयका हाय ॥ ॥ गग
श्रुपुन गगय जहा वसि
जलवा कया ह वन वा न
॥ श्रुपानमूल मरुन न्यासा
यवाय पूजा श्रुमपूजा ॥
कगनयि सहय क ॥ उं ऊं
निवमलाय स्वाहा ॥ उं ऊं
विद्यागलाय स्वाहा ॥ उं ऊं
श्रुमगलाय स्वाहा ॥ उं नि
वानामासि ॥ उं विष्णवा
मसि ॥ उं वृषयकान ॥
ॐ निजिगला विमस ॥

गगाय वगल ॥ उं ऊं युधि
वागलाय नमः ॥ उं स्थाना
पयविना ॥ उं ऊं श्रायग
लाय नमः ॥ उं श्रुमन

मृग॥ उं कूं गं कृत लायनमः॥
ॐ उं गं कूं सिगुक॥ उं कूं
वायुग लायनमः॥ उं गं
वायु गृहस्यगं॥ उं कूं आ
काग लायनमः॥ उं नि
यानामासि॥ उं कूं गं न
लायसाहा॥ ॥ ॐ नि या
ॐ नि सगुडत्वं ॥ ॥

कृदयादि॥ उं कूं कृदयाय
नमः॥ उं यकाग्रमा॥ नून
उस॥ उं की निवससाहा॥
उं स रुयगाव॥ निवसि॥
उं कूं निराये वोषट्॥ उं
यस्यः संहगपुयेवो॥ नि
खायो॥ उं कूं कयवायदू
॥ उं आगुः निस्तना॥ कव
व॥ उं कूं नृययययव
ट्॥ उं विशाह॥ नृयस॥ उं
ॐ श्रुप्यदु॥ उं नमसं नृ
द॥ ॐ नि वेदये उन्यासं ॥

उं कूं वसग लायनमः॥ उं
उं कूं वृयग लायनमः॥ उं

कूं स्यग लायनमः॥ उं
कूं नृयग लायनमः॥ उं
कूं धाग लायनमः॥ उं
कूं कि काग लायनमः॥ ॥
ॐ निगुडनिस्थगुडत्वं ॥ ॥

उं कूं वरुग लायनमः॥ उं
कूं लेकग लायनमः॥ उं
कूं (प्र)प्रेग लायनमः॥ उं
कूं वाकग लायनमः॥ उं
कूं यालिग लायनमः॥ उं
कूं पादग लायनमः॥ ॥
ॐ निगुमादिगं रुगाद॥

उं कूं वायुग लायनमः॥ उं
कूं उपसृग लायनमः॥ उं
कूं मनस लायनमः॥ उं
कूं वृद्धिग लायनमः॥ उं
कूं ब्रह्मग लायनमः॥ उं
कूं युक्तिग लायनमः॥ ॥
ॐ निनातिनिमनृगगाद॥

उं कूं पृथ्वीग लायनमः॥
उं कूं गगनग लायनमः॥ उं

ॐ हिनधवधू॥ निव
नाकि॥ स्वापा॥ ॐ निवा
नामासि॥ सेवव सेवदी
॥ स्ववग्वा॥ ॐ अमे स्वा
गा॥ सेवव ॥ स्वदा ॥ ॐ अ
धवावदा॥ श्रीलक्ष्मी स्व
सिअयधय॥ ॐ श्रीधर्म॥
श्रीस्वधू॥ स्वर्गना॥ ॐ नी
लश्रीवाणिजिकधू॥ रुम
वगा॥ धलिद॥ ॐ अम्भश्र
मिक्क॥ यववकु॥ गेहा
पिगूल॥ यिनाय महान
श्री सेवस्वगा॥ भाया॥ ॐ
सुधाश्रगा॥ रु॥ वन्दसू
य॥ रुवयवतुख॥ ॐ
वन्दमामनभाश्रगा॥ गीगा
दि॥ पुटिनियनिवाव ॥
ॐ ॐ मम्मगा॥ रु॥ कुमार
॥ स्वर्गवु॥ ॐ यदसुन्दर
धर्म॥ यिनाय॥ भाव॥ ॐ
मनामनपययन॥ नाग॥
स्वदृशाग॥ ॐ नभासुस

धिया॥ रुमवगा॥ कनाद
॥ ॐ समरवाद्यवा॥ सुक
मधि॥ स्वादान॥ ॐ सक
मवय॥ वक्रा विष्णु म
हध्वे॥ निवायायाल॥
ॐ आवप्रनवाक्र॥ ॐ
ववकु॥ यवस्वावमाला॥
ॐ अतिस्वाधूलना॥ वनि
सि यानिनी॥ गीस्वगा
ल॥ ॐ श्रीमालवालीगनि
कुम्भादि॥ मा॥ पृथिव्याम
सुवः॥ अय॥ दिवास्वधि
तिस्मतिज्ञानः॥ पुलिनायम
हगसोहगय॥ अरुसुदे
ववनस्वर्गमगतस्वावि
शादसुदुप्रवस्वाविमय॥
वृहमहोसा॥ वक्रा ऊव
ववकु॥ ॐ वक्रयज्ञान॥ वि
सुखवववकु॥ ॐ ॐ देवि
॥ निवधसिमा॥ ॐ ग
माभन॥ नकुय सुसि॥
ॐ अस्वतागजसा॥ योग

कूटामि॥ कूटन॥ उं अ
 भ्रतम भवद्वममि॥ ग
 पुनं सूर्यनिधय॥ उं
 पत्रा वृत्तं वृत्त॥ प्रवा
 नन॥ उं अ पदग वृ
 का॥ सुखनिधय॥ उं
 दवा वः सविता॥ ग
 लाय कर्ण॥ उं दवत्य
 ॥ सुभक्ष॥ कि विरु
 त्ति यम॥ गाय यम
 वृत्तग वृत्तनिधय॥
 वृत्तनादि वृत्तन॥ उं (म
 नमाय २॥ उं काव द्वा का
 य २॥ उं विष्णु मित्राय
 २॥ उं रुम दनय २॥ उं
 वसिष्ठा य २॥ उं का
 पाय २॥ उं अय २॥ उं
 वृत्त २॥ विष्णु व २॥ उं
 महान्नाय २॥ उं यु
 पनय २॥ पविर्गृही
 ता॥ उं ॐ सत्ता अत्ता
 ॥ आ यत्ता ता यत्ता

[illegible]

॥ उं द वा रा या ॥ य या द वा
 व न ॥ उं य र्वा न्द ॥ न
 दि ग ल य र्वा ॥ उं अ न यः
 स्वा य र्वा क मि ॥ अ नि
 वा क न ॥ उं क र्वा स्या र्वा
 न स्या र्वा य र्वा य र्वा क
 मि ॥ स र्वा वा क न ॥ उं न
 वा द द व पु नि ॥ अ नि क
 पु रि य द क्ति न क र्वा ॥ उं
 अ दि र्वा र्वा द न म सि ति वा
 क र्वा स्या र्वा मृ द स र्वा र्वा
 न मि स्या स र्वा द व र्वा
 उं उ व प न य र्वा द ॥ उं
 उ व न य न य र्वा द ॥ उं
 र्वा न न य न य र्वा द ॥ अ
 वा द र्वा य न न नि क्ष य ॥
 स प वि र्वा व र्वा न र्वा र्वा
 य न न नि क्ष य ॥ वा क न
 द क्ति न अ य म र्वा न
 ॥ अ क र्वा र्वा न ॥ मृ
 ता दि अ र्वा न ॥ य न न
 दि र्वा र्वा ॥ उं वि र्वा र्वा ॥

ॐ ह्रीं विष्णवे नमः ॥ ॐ नमो
२॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ धूम्रसि
॥ उषस्य मनः कृणु मां दा
य ॥ तगा श्रुतिद्वयं प्रियं
मानसं गतं ॥ ॐ आनिकः
स्य नो यस्वाहा ॥ ॐ कृणु
स्मयानि वसि ॥ घृणन ॥
ॐ गुरुध्यानाय स्वाहा ॥
ॐ गुरुश्रुत्यावधानं ॥
ॐ प्रसन्ननाय स्वाहा ॥
ॐ स्वस्ति यस्तु मन्त्रं च ॥
ॐ नामकान्त्यनाय स्वाहा
॥ ॐ मोहिर्बुधमायदाकृ ॥
ॐ गतकामाय स्वाहा ॥
ॐ कायस्वादाकस्मे स्वा ॥
ॐ सद्यस्तु कनाय स्वाहा ॥
ॐ त्वमान्यदृष्टिमा ॥
ॐ निष्कमनाय स्वाहा ॥
ॐ यंज्ञाय ज्ञायाः नयं गि ॥
ॐ श्रुतावनामकनय स्वा
हा ॥ ॐ प्रान्तय स्वादाया ना
य स्वाहा ॥ ॐ हस्तप्रान

नाय स्वाहा ॥ ॐ याः रुतिना ॥
ॐ श्रुतप्रामनाय स्वाहा ॥
ॐ श्रुतवर्गनस्तिना ॥
ॐ पूर्ववदाय मनम ॥
ॐ उपदादिवर्मा मि ॥
ॐ वृणकवलय स्वाहा ॥
ॐ मूर्धनदिवार्चनं ॥
ॐ कर्णगदाय स्वाहा ॥
ॐ हृदयकल्पितं गुरु ॥
ॐ वृणवर्धनाय स्वाहा ॥
ॐ वृणकल्पितं वृणकृत्वा ॥
ॐ मयप्रोपदानाय स्वाहा ॥
ॐ वृणनदीकामा प्राणि ॥
ॐ मखलाभावनाय स्वाहा ॥
ॐ उदरमेव नृणामस ॥
ॐ समावर्तनाय स्वाहा ॥
ॐ श्रुतपुनवदमाव ॥
ॐ विवादाय स्वाहा ॥
ॐ तं पत्नीति वल्लभं ॥
ॐ वृणुध्याय स्वाहा ॥
ॐ प्रसन्नय जामरुह ॥
ॐ मगापि गविसर्जनाय

स्वाहा॥ उं मातवपुंय॥
 उं संमुखीक नमो स्वाहा॥
 उं प्रषादुदवः प्रमिसु॥
 उं कुमनकाय स्वाहा॥
 उं विष्णुगन्धशुभगा ॥
 उं पुनिष्ठाये स्वाहा ॥
 उं मना इति ईषगा ॥
 गगाश्निष्ठा न ॥
 उं मया नृदं पुदीपा विः
 गकिरुकोरुतामनः।
 कुपुष्पा आदवकुमुय
 कालिनातवकयतिः॥ स
 दवः पूरावक्रिकं गूव
 श्रुक् दक्षिणकनः। स्वा
 हापत्नीस्त्रिगायामः आ
 गच्छन्नि कानक॥ अ
 नयश्चानयुष्यं नमः॥
 उं समिधान्निद्रवस्य गः
 यते वधियता निधि। अ
 स्मिन् रुद्रा रुद्रावन ॥
 श्रुद्रादग समिधमादाय
 ॥ उं तवानि रुद्रादिशः

रुद्राय सुद्वन्द्वमाः। ग
 दवपुष्पं रुद्रमाश्रय
 सः पुजापतिः स्वाहा॥ वा
 उं रुद्राय ग॥ प्रकं उं
 कायं न प्रकं पुनागे नि
 धाय॥ ७ ॥ ॥

गगः पञ्चगव्याम ॥
 उं ॐ वावगा धनगा ॥
 उं ॐ देवि पूषा वक्र ॥
 उं मानका क ननयमा॥
 उं गवक्रुदवाहरीय ॥
 उं विष्णुदयाना दग॥
 ॐ गिर्यवगव्याम ॥

वामरुसंनयिर्सवीय क
 लानवक्राय लत॥ उं
 मनपुजापति स्वाहा॥
 ॐ देमनवपुजापतिः
 लागः॥ श्रुवक्रुपत्नव
 लायाथन॥ उपस्य न
 न॥ अथ पात्रादकनद
 रुद्रनिष्ठां पुनियक्रिमा॥

[illegible]

नमः॥ ॐ स्वस्ति नमः॥
 नमः॥ ॐ मन्त्राय नमः॥
 ॐ पातालाय नमः॥ ॐ ज्ञे
 य नमः॥ ॐ क्षत्राय नमः॥
 ॐ सुन्दर्य नमः॥ ॐ सूर्या
 य नमः॥ ॐ या जगत्त्रयाय
 नमः॥ ॐ महाया जगत्त्र
 याय नमः॥ ॐ हृष्ट्या
 नमः॥ ॐ दक्षिणाय नमः॥
 ॐ अष्टादिभ्यो नमः॥ ॐ
 हामदवेगाय नमः॥ य
 नो गच्छ पृथ्वीं त्रिदशा
 न॥ ॐ सर्वेभ्यो नमः॥ ॐ
 मे॥ ॥ अन्तर्नामक
 न॥ ॐ निधाना मासि॥ ॐ
 निधानय स्वाहा॥ ॥ ॐ
 रुद्र नमो दवेभ्यः॥ ॐ
 तिलकस्तन॥ दक्षिणाय
 क्षयिभ्यः॥ ॐ परम
 न॥ ॥ ॐ नमो दवा
 यमि कृष्ण इक्ष्वि वज्र
 रुद्र॥ अन्तर्वेद रुद्रं व

[illegible]

कोय ॥ उं न कोय स्वाहा ॥
 ॐ न कोय ॥ उं कृष्णाय
 स्वाहा ॥ ॐ न कृष्णाय ॥ उं
 सयुगाय स्वाहा ॥ ॐ न स
 युगाय ॥ उं श्रुति न कोय
 स्वाहा ॥ ॐ न श्रुति न कोय
 ॥ उं मधवे न नृपाय स्वा
 हा ॥ ॐ न मधवे न नृपा
 य ॥ षट्त्रिंशद्द्वन्द्वं ॥
 उं सकर्मा शून्य समिध स
 फत्रिंशत्सकर्मसंयः स
 फभामयि यानि सहाय्य
 फभामा मन्त्रि सफभा
 नित्राय लखधूत न स्वाहा
 ॥ त्रिकर्त्रिंशत्स्वर्णं ॥ स
 फत्रिंशद्द्वन्द्वं ॥ ॥ त्रिंशत्
 पञ्चदश ॥ उं ह्रः स्वाहा
 ॥ ॐ न ह्रः ॥ उं रुद्रः स्वा
 हा ॥ ॐ न रुद्रः ॥ उं स्वः
 स्वाहा ॥ ॐ न स्वः ॥ उं ह्र
 रुद्रः स्वः स्वाहा ॥ ॐ न
 ह्र रुद्रः स्वः ॥ ॥ उं लेना
 शून्य नृपय विद्वान्द

वस्यहउग्रयगामिनासा
।यडिष्टावडिगमसा
वाभाविष्महपाठसि
यमृष्मसाहा॥ॐ
मनिषामासा॥सागा॥
उंसत्तनाश्रुनयभाह
मानानेदिष्टाश्रुसाउ
समाश्रुष्टो।श्रुययेम
लमवृन०वनालाया
हिमृगाके०सूहवान
यप्रिष्टाहा॥ॐमनि
यनृमर्या॥सागा॥उं
श्रुयाग्यानेस्यनरिम
सिपायसत्त्वमिर्वम
याश्रुमि।श्रुयानायकं
वहास्ययानाधदिहोव
उ०साहा॥ॐमया
याग्न॥उंयगलमव
नृगयमहययडिष्टा
पागमविगतामहानः
गसिनाश्रुयसविदुवि

पुष्टि॥वमृवनुमनृगः
स्वकायसाहा॥ॐद्व
नृमयासविदुविपुष्टि
लेखादययामनृहः
स्वकायः॥उंउदमृ
वनृमपा॥ॐद्वनृम
यादिष्टाप्रियगय॥॥
ॐनियमयानृन॥गता
वहादम॥उंमृवदा
यसाहा॥ॐद्वमृवदा
य॥उंययिष्टाहा॥ॐ
द्वयिष्टा॥उंश्रुमयस
हा॥ॐममय॥उंय
द्वदयसाहा॥ॐद्वय
द्वदय॥उंश्रुनविगा
यसाहा॥ॐद्वश्रुनवि
काय॥उंवाययसाहा
॥ॐद्ववायव॥॥उं
सामवदायसाहा॥ॐ
सामवदाय॥उंदिष्टा
हा॥ॐद्वदिष्टा॥उंसुया
यसाहा॥ॐद्वसुया

[illegible]

सुदसस्यतयं ॥ उं अन्नम
तयं स्वाहा ॥ ॐ दमनसम
य ॥ ॐ तितयं दा इति ॥ ॥
उं ह्रुवः स्वः वृषा
स्वाहा ॥ ॥ दनयदय
सा ॥ ॥ गयेवव
मायुगाग-वद-लाकपा
न-कसन-नाग-यकय
कनी-जीर-आ-गन-गु
नू-यागिनी-सर्वद्वय
घृणारुतिरुह्याग ॥ ॥
उं कामकामदूयधुमि
नायवन्नयय ॥ ॐ द
यात्विद्यायुधुप्रजायेडा
सधायः ॥ सन्नवद्यगप
ह्रदं पनागनिधाय ॥ उं
सेफगात्रप्रसमिधसफ
जिह्वांसफमृषयः ॥ सफ
धामिप्रियानिसफहाया
सफध्वायजनिमफ
यानिवापृणस्वधुमन
स्वाहा ॥ ॥ ॐ तितयः

गङ्गापूजम् ॥ ० ॥

तमसिनाडनिकात्रयम्
॥ ॥ उं दं वस्यत्वा सवित्रे
ऽप्रसवे निनावा इत्या ।
पूजा हस्त्या ॥ ब्राह्मि वा
यत्र यत्र ॥ उं प्रत्यक्ष
० वरुण प्रत्यक्षा श्रवाद्या
निष्क ० वरुण निष्क
श्रवाद्या ॥ यत्र यत्र ॥
उं श्रुति सिमा सिमपन्न
वा वाजिनं वा वाजिभ्याम्
समाय्या ॥ कुलानसमा
ऊर्न ॥ ॥ यत्र मानेन वा
हि पात्र ब्राह्मि निधाय ॥
गुर्ववाय्य पूजनं ॥ ॥
ब्राह्मि पात्र समर्पणं ॥ उं
यवाकृतमिले मिष्टिपः
यामृतममिष्टिक । समि
धश्च हले पूर्वा वरुण
माकृतमालिका ॥ नमो नि

धाय ॥ ॥ गुर्ववाय्य पूज
नं ॥ ब्राह्मि पात्र समर्पणं
॥ ॥ वाक् ॥ उं श्रुयुः श्रि
यं वरुणाय ॥ पूजयेत्
धनानिव । रु वना गुत्र
प्रसादन सर्वकार्यक
सिद्धि ॥ यत्र यत्र ॥
श्रवाद्या गृहीत्वा ॥ उं ॐ
द ० हवि ॥ ब्राह्मि पूजनं ॥
नमो श्रुयुः ॥ कुल
कृतमिलेन ॥ यथेनामा
नयं वक्ष नवायति साक
निष्क व न्यसिद्धिस्तु ॥
महावाकृति पूर्वमतिः
साकृति दातव्यं ॥ ॥
वक्त्रा पुनीत वद साक
पात्र कलन मुनिनः
नाग यकृतमाला ग्रीव
श्री अथवा मादि सर्व
दवताः स्वसमर्पणं नि
साकृति दातव्यं ॥ समिध
सह यत्र न पूजनी ॥ ॥

पुत्रस्य जगत् ॥ ॥ गंगा
इति पूज्य ॥ ॐ पुत्रस्य
विपत्राय दसपुत्रस्य पुन
वापद । वपुन विप्रीना
वहा ॥ समुद्र ॥ गंगा
गोलाहा ॥

यथा यत्स्य विपत्राय कर्म
कावयत् ॥ पुनि वान ॥

गगाय कवाह ॥ गगान
खलिक वाया वधुया द
वनस इ सकनग सोड
नवा क इ सकन वना प
न ॥ पूर्वदि मास ॥ स्नान क
नम थया क वन डाय
धीन ॥ वा मगन ॥ ॐ श्री
यादि ॥ यज्ञमानस्य गुरु
पुनि वाय क कर्म नि नि
वस्तान नि मिथार्थ क कुरु
या सुया यि श्रु नमः ॥
पुष्प नमः ॥ ॐ श्री कृष्ण

नन ॥ पुन नमस्तु ॥ न्या
स अद्य यो य दृष्टा ॥ कल
न पृष्ठ न ॥ ॐ काल सम
दा यनमः ॥ ॐ समुद्रा द
मि मधुमा ॥ ॐ दाने दुप
ॐ नाम मृग त्वमाना य
गम्य ना मगुर्धय द लि
ॐ को द वा नाम मृगस्य
ना रिः ॥ की व समुद्राय
नमः ॥ ॐ ययः पृथिव्या
॥ ॐ दधि समुद्राय नमः
॥ ॐ समुद्राय स्वावा गा
य स्वाहा सति लाय स्वावा
गा य स्वाहा । श्री नो धृष्टाय
स्वावा गा य स्वाहा य नि ध
श्रा य स्वावा गा य स्वाहा स
मी दा य स्वावा गा य स्वाहा
जय स्य वै स्वावा गा य स्वा
हा ॥ ॐ पुन समुद्राय नमः
॥ ॐ देव नः सविता स
ति ॥ पुना दा वा वर थ
ॐ सह प्रयया श्रु नमः ॥
ॐ सुना समुद्राय नमः ॥

॥ उं समुद्रं क्षुद्रासलिलस्य
मध्वाना यूनाना वनमुन
विष्मना । ॐ न्याया वक्षी
वृषणा नराटश्रया दवा
त्रिदमावदनु ॥ उं दक्ष
दक्ष समुद्राय नमः ॥ उं
उं दवस्यत्वा ॥ उं ॐ दक्ष
मुद्राय नमः ॥ उं समुद्र
त्वानुमना श्रुत्य ननु व
क्रा ॐ धदिवा द्रुपद
न । नृगा यत्नाना नडा लोका
सिवा ॥ समुद्राय नमः ॥
हिषावदनु ॥ उं सिधिम
मुद्राय नमः ॥ उं मध्व
गच्छादा ननु विद्वगच्छ
सादा दव ॥ सतिगार्ग्य
कृष्णादा मिश्रवेत्त ॥ नमः
कृष्णादा हागार्ग्य गच्छ
हा कृष्णादा ॥ सिगच्छादा
या वा पृथिवी न कृष्णादा
यत्नं गच्छादा सामं ग
कृष्णादा दिव्यं नरा क

[illegible]